तारकेश्वरी 'सुधि'
जन्मतिथि- 10.07.1973
जन्मस्थान- सिलपटा (अलवर)
पिता का नाम- श्री सहीराम यादव
माता का नाम- श्रीमती शकुंतला यादव
मोबाइल नम्बर - 9829389426

दुनिया का आँगन बड़ा, जिसमें देश अनेक।
सबके अलग स्वभाव हैं, दर्शन, धर्म, विवेक।।
दर्शन, धर्म ,विवेक, संस्कृति, एवं भाषा।
सबके निज उद्देश्य, पृथक इन की परिभाषा।
कहती है सुधि सत्य, जगत है सुंदर बगिया।
रखती अनुपम रूप, घूम कर देखो दुनिया।।
****

बाकी हैं कुछ लोग जो, पहचानें पर पीर।
उनसे जान छुड़ाइए, जिनका मरा जमीर।।
जिनका मरा जमीर, नहीं आँखों में लज्जा ।
कर पाएँगे खाक, आपकी जीवन-सज्जा?
'सुधि' उनको दो त्याग, छोड़ दो बस एकाकी।
चलो उन्हीं के साथ, चेतना जिनमें बाकी।।
****

नाहक दुख ढोते फिरें, खुशियाँ करतीं शोर।
है विधि के ही हाथ में, पल-पल जीवन- डोर।।
पल-पल जीवन- डोर, श्वास की गिनती सीमित।
पल भर पाकर चैन, सभी हो जाते हर्षित।
कहती है सुधि सत्य, दुखों के खुद हम वाहक।
सुख-दुख जीवन-चक्र, परेशां हम क्यों नाहक?
****

कुदरत ने विखरा दिए, विविध भांति के रंग ।
थोडा सा जी लें सभी, इन्द्रधनुष के संग।।
इन्द्रधनुष के संग, प्रकृति से प्रेम करेंगे ।
मधुर मधुर संगीत, राग दिल में भर लेंगे ।
कहती है सुधि सत्य, बाँचता है अम्बुद खत ।
रखना मनुज सहेज, कीमती है ये कुदरत ।।
****

निखरी-निखरी हर दिशा, खिली- खिली सी धूप।
बारिश के पश्चात क्या, सुंदर भू का रूप।।
सुंदर भू का रूप, धरा अपनी आल्हादित।
जीव-जंतु, हर वृक्ष, सभी लगते उत्साहित।
खुशबू है चहुँ ओर, छटा मोहक सी बिखरी ।
हटी हवा से धूल, प्रकृति है निखरी-निखरी ।।
****

लालन-पालन से उसे, दो सुदृढ आधार।
जिससे बिटिया कर सके, स्वप्न सभी साकार।।
स्वप्न सभी साकार, गले बस उसे लगाओ।
रँग देगी आकाश, आस का रँग पकड़ाओ।
कहती है सुधि सत्य, भरे खुशियों से प्रांगण।
बने नींव मजबूत, करो यूँ लालन-पालन।।
****

कितनी है उपयुक्तता, उन्हें कहाँ है बोध।
लहरें उच्छृंखल बनी, तट का करें विरोध।।
तट का करें विरोध, आजमा कर नाना गुर।
होकर बस बेफिक्र, तोड़ने को तट आतुर।
तोड़ आज तटबंध, हुई उल्लासित इतनी।
भूल गईं ये बात, हदें उनकी हैं कितनी।।
****

करती है व्यक्तित्व का, शिक्षा सदा विकास।
जीवन में रखती तभी, अपना रुतबा खास।।
अपना रुतबा खास, दक्षता हममें लाती।
देकर सच्चा ज्ञान, सत्य की राह दिखाती।
दे 'सुधि' ज्ञान-प्रकाश, हृदय -अँधियारा हरती।
करे आत्मा शुद्ध, सफल जीवन को करती।।
****

जीवन का आँगन यहाँ, ऐसा रखे स्वरूप।
टुकड़ा-टुकड़ा छाँव है, टुकड़ा-टुकड़ा धूप।।
टुकड़ा-टुकड़ा धूप, जलाती, झुलसाती है।
आकर लेकिन छाँव, घाव को सहलाती है।
टूटी छत की मित्र! वक़्त जब करता सीवन।
सिल जाता हर जख्म, छाँवमय होता जीवन।।
****

थोड़ा भी चूके अगर, श्रम करने से आज ।
रख देगा ये वक्त भी, किसी और सिर ताज ॥
किसी और सिर ताज, देखकर मन रोयेगा।
होगा फिर संताप, चैन मन का खोयेगा ।
जिसने श्रम के साथ, प्रेम से नाता जोड़ा ।
मिलता आखिरकार, उसे ज्यादा या थोड़ा।।
****